

Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
M.B. R.R.V.Pd. Singh College, Ara

मैक्स वर्टहाइमर का गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना में योगदान

Contribution of Max Wertheimer in founding Gestalt Psychology

1. परिचय (Introduction)

- मैक्स वर्टहाइमर (1880–1943) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के प्रमुख संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि मानसिक अनुभव को उसके संपूर्ण रूप (Whole) में समझना चाहिए, न कि केवल उसके अलग-अलग घटकों में विभाजित करके।
- उनके साथ दो अन्य प्रमुख सहयोगी थे:
 - (I) Wolfgang Köhler
 - (II) Kurt Koffka
- इन तीनों ने मिलकर 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जर्मनी में गेस्टाल्ट आंदोलन की नींव रखी।

2. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि

- उस समय मनोविज्ञान पर मुख्यतः दो धाराओं का प्रभाव था:
 - (I) संरचनावाद (Structuralism)
 - (II) व्यवहारवाद (Behaviorism)
- संरचनावाद अनुभव को छोटे-छोटे तत्वों में बाँटकर अध्ययन करता था। वर्टहाइमर ने इसका विरोध करते हुए कहा— “Whole is different from the sum of its parts.” (संपूर्ण अपने भागों के योग से भिन्न होता है।)

3. Phi-Phenomenon (1912) की खोज

(A) गेस्टाल्ट की शुरुआत



Edit with WPS Office

- 1910 में वर्टहाइमर ने एक ट्रेन यात्रा के दौरान प्रकाश की गति और दृश्य अनुभव पर विचार किया। बाद में फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय में उन्होंने प्रयोग किया।
- 1912 में उन्होंने "Experimental Studies on the Perception of Movement" नामक शोध प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने Phi-Phenomenon की खोज की।

(B) Phi-Phenomenon क्या है?

- जब दो स्थिर प्रकाश बिंदु थोड़े अंतराल पर क्रमशः जलते-बुझते हैं, तो व्यक्ति को उनमें गति (movement) का अनुभव होता है।
- वास्तव में कोई वास्तविक गति नहीं होती, परंतु मन उसे गति के रूप में अनुभव करता है।

(C) महत्व

- इस खोज ने सिद्ध किया कि अनुभूति केवल संवेदनाओं का योग नहीं है।
- मन सक्रिय रूप से संगठन (organization) करता है।
- यही गेस्टाल्ट सिद्धांत की नींव बनी।

4. गेस्टाल्ट सिद्धांतों का प्रतिपादन

वर्टहाइमर ने प्रत्यक्षण (Perception) के संगठन के नियम दिए। बाद में इन्हें "Laws of Organization" कहा गया।

प्रमुख नियम

- समीपता का नियम (Law of Proximity)
- समानता का नियम (Law of Similarity)
- समापन का नियम (Law of Closure)
- सातत्य का नियम (Law of Continuity)
- आकृति-भूमि सिद्धांत (Figure-Ground Principle)

इन सिद्धांतों से स्पष्ट हुआ कि मन उत्तेजनाओं को स्वाभाविक रूप से संगठित कर अर्थपूर्ण रूप देता है।

5. उत्पादक चिंतन (Productive Thinking)



वर्टहाइमर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Productive Thinking में यह बताया कि सच्चा चिंतन रटने (rote learning) से अलग होता है।

उत्पादक चिंतन की विशेषताएँ

- समस्या की संरचना को समझना
- अंतर्दृष्टि (Insight) द्वारा समाधान
- यांत्रिक अभ्यास से अलग

उन्होंने शिक्षा प्रणाली की आलोचना की और कहा कि विद्यार्थियों को समझ के आधार पर सीखना चाहिए, न कि केवल नियम याद करके।

6. संरचनावाद और व्यवहारवाद की आलोचना

(A) संरचनावाद की आलोचना

- अनुभव को कृत्रिम रूप से विभाजित करता है।
- संपूर्ण अनुभव की उपेक्षा करता है।

(B) व्यवहारवाद की आलोचना

- केवल बाह्य व्यवहार पर ध्यान देता है।
- मानसिक प्रक्रियाओं की अनदेखी करता है।
- वर्टहाइमर ने कहा कि मानसिक संगठन और अर्थ-निर्माण को समझे बिना मनोविज्ञान अधूरा है।

7. शिक्षा एवं अधिगम में योगदान

- अंतर्दृष्टि आधारित अधिगम का समर्थन
- समस्या-समाधान को रचनात्मक प्रक्रिया माना
- गणित शिक्षण में संरचना की समझ पर बल
- उनके विचारों का प्रभाव आगे चलकर संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Cognitive Psychology) पर पड़ा।



8. गेस्टाल्ट आंदोलन का प्रसार

नाजी शासन के कारण वर्टहाइमर अमेरिका चले गए और वहाँ उन्होंने गेस्टाल्ट सिद्धांत को आगे बढ़ाया।

उनके विचारों का प्रभाव पड़ा:

- संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
- सामाजिक मनोविज्ञान
- कला और डिजाइन
- समस्या-समाधान अनुसंधान

9. समालोचनात्मक मूल्यांकन

सकारात्मक पक्ष

- मनोविज्ञान को समग्र दृष्टिकोण दिया
- प्रत्यक्षण के वैज्ञानिक अध्ययन की नई दिशा
- संज्ञानात्मक क्रांति की नींव रखी

सीमाएँ

- प्रयोग मुख्यतः प्रत्यक्षण तक सीमित
- कुछ सिद्धांत वर्णनात्मक अधिक, व्याख्यात्मक कम

10. निष्कर्ष

- मैक्स वर्टहाइमर ने गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना कर यह सिद्ध किया कि—
- मन केवल उत्तेजनाओं का निष्क्रिय ग्राही नहीं है,
- बल्कि वह सक्रिय रूप से अनुभवों को संगठित करता है।
- उनका योगदान आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, शिक्षा, तथा समस्या-समाधान अनुसंधान की आधारशिला है।

